कला के आयाम

शहर के अनदेखे चेहरे

शेफाली जैन

"तुम जहाँ रहते हो, उस जगह से तुम्हारा क्या रिश्ता है?" यह सवाल अगर किसी चित्रकार से पूछा जाए तो शायद हमें इसके जवाब उसकी रचनाओं में मिल जाएँ। क्या तुमने कभी अपने इस रिश्ते को चित्रों में, लेख में, गीत में या फिर नाटक में तब्दील करने की कोशिश की है?

अक्सर हम जहाँ बहुत सालों से रहते आए हैं, वह जगह हमारे लिए आदत-सी बन जाती है। और जिन चीज़ों के हम आदी हो जाते हैं, उन पर हमारा ध्यान कम होता जाता है। पर कई चित्रकारों और लेखकों ने उस जगह के बारे में कला के माध्यम से काफी कुछ सोचा और विचारा है, जहाँ वे बसे हैं। शायद उनकी कला ने उन्हें उनके शहर/जंगल/गाँव के प्रति उदासीन नहीं होने दिया। आज हम ऐसी ही एक चित्रकार से मुलाकात करेंगे। हम उनकी कला की कुछ झलकियों से उनके शहर को थोड़ा-सा जानने की कोशिश करेंगे।

कृपा मुम्बई में रहने वाली एक कलाकार हैं। वे अक्सर कला के माध्यम से अपने शहर मुम्बई की बड़ी दिलचस्प और बारीक छानबीन करती हैं। मुम्बई को कौन नहीं जानता! इतना बड़ा महानगर, भारत की बिज़नेस कैपिटल, बॉलीवुड के सितारों की नगरी, गेटवे ऑफ इंडिया, मरीन ड्राइव वगैरह-वगैरह। चलो इस विशाल और चमकीले शहर को हम कृपा की नज़र से देखें।

करीब 2002 में कृपा ने एक पहल शुरू की जिसे उन्होंने 'मैपिंग मुम्बई' का नाम दिया। इसके तहत उन्होंने तय किया कि वे मुम्बई के कुछ ऐसे इलाकों में जाएँगी, जिनका ज़िक्र मुम्बई की

चित्र 1. 'मैपिंग मुम्बई' सीरीज़ से वॉटरकलर स्केच, चित्रकार: कृपा

चमकीली छवि में कम नज़र आता है। उन्होंने यह भी तय किया कि वे इन इलाकों में पैदल घूमेंगी। वे चाहती थीं कि इन उपेक्षित इलाकों के बारे में जानें और इस जानकारी को हमारे साथ साझा करें। हम क्यों इन्हें नज़रअन्दाज़ करते हैं? यहाँ कौन लोग बसते हैं? हम एक-दूसरे से कैसे जुड़े हैं?

शहर में पैदल यात्रा

तुम पूछोगे पैदल क्यों? पैदल चलते हुए हमें चीज़ों को करीब से और इत्मीनान से देखने का मौका मिलता है। हम जब मन चाहे रुककर चीज़ों को समय दे सकते हैं। शायद चलते-चलते थक जाने पर हम नीम्बू सोडा पीने बैठ जाएँ। बैठे-बैठे हमारा कोई नया दोस्त बन जाए जो हमें उस जगह के बारे में कुछ बताए। शायद हम किसी सँकरी गली में घुस जाएँ और अनायास ही शहर का कोई अनदेखा पहलू सामने आ जाए।

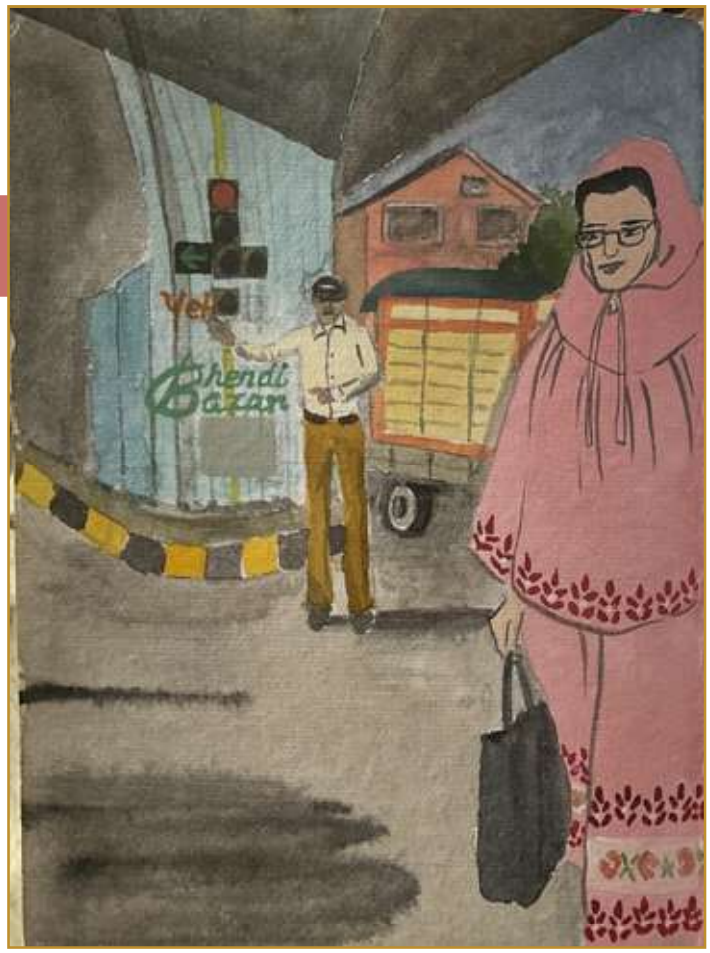

चित्र 2. 'मैपिंग मुम्बई' सीरीज़ से वॉटरकलर स्केच, चित्रकार: कृपा

ये जो अनगिनत मौके पैदल यात्रा से मिल सकते हैं, वे गाड़ी में बैठकर घूमने से नहीं मिल सकते हैं। इसलिए शायद कृपा के लिए पैदल घूमना काफी मायने रखता है। वे पैदल सफर करते वक्त अपनी स्केचबुक, वॉटरकलर और कैमरा साथ रखती हैं। फिर वे वहीं बैठकर चित्र बनाती हैं या उस जगह के फोटो खींचकर घर पर इन्हें चित्रों में तब्दील करती हैं। कृपा ने भिण्डी बाज़ार, हाज़ी अली, क्रॉफोर्ड मार्केट के ऐसे बहुत सारे दिलचस्प चित्र बनाए हैं (चित्र 1 व 2)।

'मैपिंग मुम्बई' के दौरान कृपा एक संस्था से जुड़ीं जिसका नाम है 'द पीपल प्लेस प्रोजेक्ट'। इस प्रोजेक्ट का मकसद कृपा के 'मैपिंग मुम्बई' के मकसद से मिलता-जुलता है – शहर की अनसुनी कहानियों को बाहर लाना। आम लोग और उन विभिन्न समुदायों के लोगों की कहानियों को सामने लाना, जिनकी मेहनत-मज़दूरी पर शहर खड़े हैं। कृपा अपनी लेखिका दोस्त फ्लर डी'सूज़ा के साथ मिलकर इस प्रोजेक्ट से जुड़ीं। फिर उन्होंने मुम्बई के उत्तन, गोरई, वर्सोवा, खार डण्डा और वर्ली कोलीवाड़ा में जाना शुरू किया।

कोली मछुआरों के एक समुदाय का नाम है और वाड़ा यानी जहाँ लोग बसते हैं। कृपा कोलीवाड़ा में समय बिताने लगीं। वहाँ के लोगों से बातचीत करने लगीं। वर्ली कोलीवाड़ा में एक 82 वर्षीय बुज़ुर्ग काटकर काका से उनकी दोस्ती हुई। काटकर काका कोली समुदाय से आते हैं। उन्होंने कृपा को बताया कि कोलीवाड़ा के लोग मुम्बई के सबसे पुराने निवासी हैं। काटकर काका के पिता और दादा ने ब्रिटिश राज के समय मुम्बई की पहली सड़कें, सीवेज सिस्टम, पुल आदि बनाए। इस समुदाय ने और लश्कर (दक्षिण एशियाई मज़दूरों को अँग्रेज़ लश्कर कहते थे), पठान, चीनी, मराठा और ईसाई समुदाय के लोगों ने मिलकर मेहनत और कौशल से मुम्बई के पहले बन्दरगाह बनाए और बड़े-बड़े जहाज़ भी।

मुम्बई में कोली समुदाय बहुत सारे क्षेत्रों में समुद्री तट पर बसा था और आज भी बसा है। लेकिन शहरी प्रदूषण (जो इन वाड़ों की खाड़ियों के रास्ते समुद्र में बहा दिया जाता है), ग्लोबल वार्मिंग, अत्यधिक मच्छीमारी और शहरी विकास योजनाओं के तहत इन वाड़ों के अस्तित्व पर खतरा बढ़ता जा रहा है। आजकल कई लोग इन वाड़ों को अवैध झुग्गी-झोपडी ठहराकर ज़मीन हड़पने की होड़ में हैं। ऐसे में कृपा और अन्य कलाकार या कलाकार समुदाय (जैसे पराग काशीनाथ टंडेल और अरवानी आर्ट प्रोजेक्ट) कोलीवाड़ा के साथ जुड़कर उसकी वर्तमान स्थिति और इतिहास के बारे में लोगों को जागरूक करने का काम कर रहे हैं। कोलीवाड़ा पर बच्चों के लिए प्रकाशित तीन बहुत सुन्दर चित्रकथाओं के चित्र कृपा ने बनाए हैं। ये हैं *लॉस्ट एंड फाउंड*

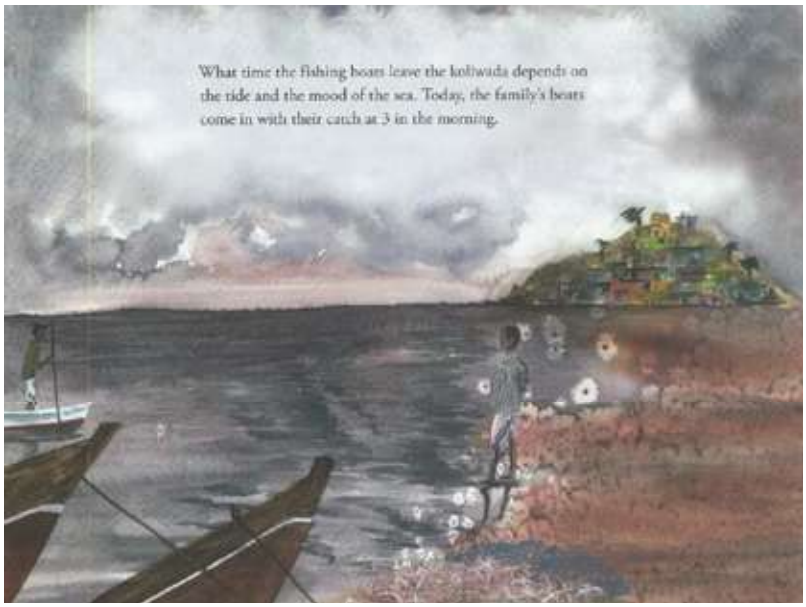

चित्र 3. *बॉम्बे डक्स, बॉम्बे डॉक्स* का एक चित्र, चित्रकार: कृपा, लेखक: फ्लर डी'सूज़ा, प्रकाशक: प्रथम बुक्स

इन ए मुम्बई कोलीवाड़ा, मीरा'स विलेज बाय दी सी (*जादुई मीरा* – हिन्दी) और *बॉम्बे डक्स, बॉम्बे डॉक्स*। ये कृपा की कोलीवाड़ा में की गई कई पैदल यात्राओं और शोध के सुन्दर और संवेदनशील नतीजे हैं। *बॉम्बे डक्स, बॉम्बे डॉक्स* में कृपा द्वारा बनाए गए चित्र तुम चित्र 3 व 4 में देख सकते हो।

जैसे हमने देखा, कृपा का इन किताबों को बनाने का सफर पैदल शोध यात्रा से शुरू होता है। कोलीवाड़ा की पहली-पहली छाप उनके स्केचेज़ में मिलती है। फिर जब कोली समुदाय से बातचीत होती है तब उनके चित्रों में वो भी सामने आता है जो आँखों के सामने नहीं पर कोलीवाड़ा के इतिहास में है, उसकी कहानियों में है। और इसके अलावा भी बहुत कुछ सामने आता है, जैसे मुम्बई के पुराने बन्दरगाह, वहाँ के पुराने जहाज़ और पुराना नक्शा जो अब काफी बदल चुका है, कोली समुदाय की वर्तमान दिनचर्या (मछली पकड़ने का समय जो समुद्री ज्वार-भाटे पर निर्भर है), वहाँ पाए जाने वाले खास समुद्री जीव– जैसे रेतीले तटों पर स्टार फिश, सी एनीमोन, पॉर्पिता पॉर्पिता (नीला बटन), पुर्तगाली मैन ऑफ वॉर और पथरीले तटों पर केकड़े, झींगे, बार्नेकल और मस्सल, वहाँ के लोगों के लगातार बढ़ते मुम्बई शहर के प्रति विचार, वहाँ के बच्चों की ज़िन्दगी वगैरह।

चित्रकार और प्रयोगात्मक शोध

तो यह साफ ज़ाहिर है कि चित्रकार होना कृपा के लिए केवल किसी नई जगह को ढूँढकर उसे सुन्दर रंगों और रूपों में ढालना नहीं है। जगह केवल पेड़, पहाड़, बिल्डिंग, समुद्र से नहीं, बल्कि वहाँ रहते लोगों, जानवरों, वहाँ सुनाई कहानियों और वहाँ घटी घटनाओं से भी बनती है। इन सब चीज़ों को अपने चित्रों में लाने के लिए कृपा लगातार कुछ ऐसे कलात्मक तरीके (जैसे पैदल घूमना, लोगों से बातचीत करना आदि) खोजती और अपनाती हैं जिससे जगह अपने अलग-अलग पहलू उनके सामने खोले। चित्रकार यहाँ एक शोधकर्ता भी है जो एक संवेदनशील चित्र बनाने के लिए खास तैयारी करती है।

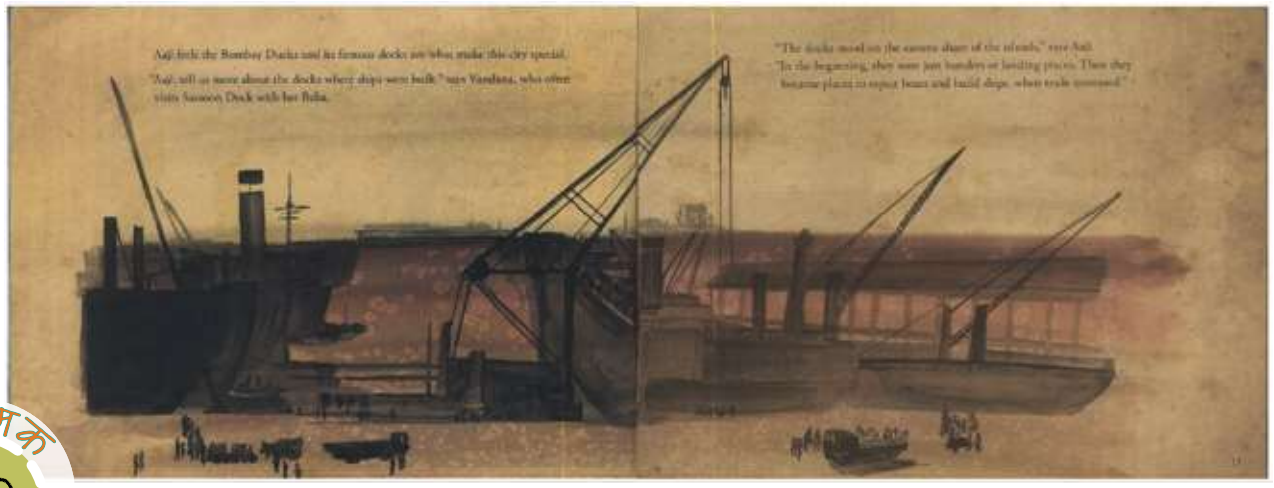

चित्र 4. *बॉम्बे डक्स, बॉम्बे डॉक्स* का एक चित्र, चित्रकार: कृपा, लेखक: फ्लर डी'सूज़ा, प्रकाशक: प्रथम बुक्स

एक अमेरिकी कलाकार एड्रिअन पाइपर ने इस विषय को लेकर 60 और 70 के दशक में कुछ अनोखे प्रयोग किए। वे अश्वेत समुदाय (ब्लैक कम्युनिटी) से आती हैं। अमेरिका में ब्लैक होना और फिर एक ब्लैक औरत होना, दोनों ही भेदभाव और उत्पीड़न के चलते उन्हें सार्वजानिक जगहों पर सुरक्षित महसूस नहीं करने देता था। तो एक दिन वे एफ्रो विग लगाकर ब्लैक आदमी का भेस पहनकर सार्वजनिक जगहों पर घूमीं! वे देखना चाहती थीं कि शहर उनके बदले हुए अस्तित्व के सामने क्या चेहरा दिखाएगा? क्या यह चेहरा अलग होगा? क्या आदमी दिखने के कारण वे उन जगहों पर आसानी से जा पाएँगी जहाँ एक औरत नहीं जा सकती? पर एक ब्लैक आदमी को शहर कैसे देखता, अपनाता या ठुकराता है? अगर वे एक श्वेत आदमी या औरत बनकर घूमतीं तो क्या शहर उन्हें ज़्यादा अपनाता?

तुम भी ऐसे कुछ प्रयोग आज़मा सकते हो। अपने गाँव/शहर/कस्बे की कोई अनजान जगह चुनो और वहाँ पैदल घूमकर आओ। अपने साथ अपनी स्केचबुक ले जाना मत भूलना! वहाँ स्केचिंग करते वक्त लोग ज़रूर रुककर तुम्हें देखने लगेंगे। यही मौका है उनसे दो बातें करने का और उनके इलाके के बारे में उनसे और गहराई में जानने का! कृपा बताती हैं कि एक लड़की होने के कारण कभी-कभी अनजान इलाकों में अकेले घूमना मुश्किल हो जाता है। अगर अकेले जाना तुम्हारे लिए मुनासिब या सहज नहीं, तो किसी साथी के संग जाओ।

कृपा ने भी एक ऐसा प्रयोग किया। एक दिन वे बुर्का पहनकर मुम्बई शहर घूमीं। कृपा मुस्लिम धर्म समुदाय से नहीं हैं। वे कहती हैं कि उस दिन बुर्का पहनकर उन्हें पहली बार महसूस हुआ कि चूँकि उनका चेहरा ढँका हुआ है, इसलिए वे ज़्यादा इत्मीनान से सब को देख पा रही थीं। उन्हें चिन्ता नहीं थी कि उन्हें कोई घूर रहा है क्योंकि उनका चेहरा सबसे छुपा था। उन्हें एक खास तरह की स्वतंत्रता का एहसास हुआ। ये प्रयोग भी कुछ अहम सवाल उठाता है। क्या इसका मतलब है कि बुर्का पहनने वाली मुस्लिम औरतें मुम्बई में सार्वजनिक स्थानों पर स्वतंत्र महसूस करती हैं? जैसे सार्वजनिक जगहों पर लिंग भेद है वैसे क्या यहाँ पर धर्म के आधार पर या फिर जाति के आधार पर भी कोई भेद हैं? कृपा इस प्रयोग को आगे भी अपनाना चाहती हैं।

चित्र 5 व 6. कृपा द्वारा खींची गई कोलीवाड़ा की तस्वीरें।

इन कलाकारों के प्रयोग हमें यह बताते हैं कि किसी जगह के कितने अनदेखे चेहरे हैं। इनमें से कई चेहरे तो मानो कुछ समुदाय, लिंग, जाति या श्रेणी के लोगों की पहुँच से परे ही रखे गए हैं। पर एक शोधकर्ता चित्रकार सोच-समझकर प्रयोगात्मक तरकीबों से शहर के इन अगम्य चेहरों को टटोलने की कोशिश कर सकती है!